*IOSR Journal Of Humanities And Social Science (IOSR-JHSS)*
*Volume 28, Issue 9, Series 1 (September, 2023) 68-70*
*e-ISSN: 2279-0837, p-ISSN: 2279-0845.*
*www.iosrjournals.org*

# भारतीय समाज में महिलाओं की सामाजिक–आर्थिक स्थिति–

डॉ० अनिल कुमार उपाध्याय
*विभागाध्यक्ष समाजशास्त्र एवं समाजकार्य विभाग*
*शासकीय नेहरू पी० जी० कॉलेज बुढ़ार*
*जिला शहडोल मध्य प्रदेश*

भारतीय समाज में नारी की भूमिका सदैव परिवार के परिधि रही है। रोजगारों के सभी शाखाओं में शामिल होने के कारण उसकी भूमिकां में दिन–प्रतिदिन परिवर्तन हो रहा है। जिससे उसका योगदान अब केवल परिवारिक न होकर सामाजिक एवं आर्थिक भी हो गयी है। ऐसी दोहरी भूमिका के कारण उनके वैवाहिक एवं पारिवारिक जीवन के मध्य सामन्जस्य में समस्या उत्पन्न होना निश्चित है। व्यक्ति के सामाजिक–आर्थिक पृष्टिभूमि का महत्व परिवर्तन एवं गतिशीलता का अध्ययन में महत्वपूर्ण स्थान रखता है। परिवर्तन शीलता का मापन मानव की सामाजिक एवं आर्थिक स्थिति के आधार पर किया जाता है। सामाजिक गतिशीलता एवं परिवर्तन से सम्बन्धित अनेक अध्ययनों में समाजशास्त्रियों का कथन है कि व्यक्ति की सामाजिक पृष्ठिभूमि और गतिशीलता में घनिष्ठ अन्तर्रसम्बन्ध पाया जाता है।

प्रस्तुत शोध पत्र में कार्यशील महिलाओं की सामाजिक–आर्थिक संरचना को दर्शाया गया है। इसकी प्रस्तुतीकरण के लिए शोधकर्ता ने एक परिकल्पना दिया है जिसमें अधिकाशं महिलायें कार्यौजन से प्रतिसिद्ध तथा मध्यवर्गीय सामाजिक–आर्थिक स्तर पर जीवन निर्वाहन कर रही है। इस परिकल्पना के परीक्षण के लिए निम्नलिखित आयामों को शामिल किया गया है–

1– कार्यशील महिलायों की आयु, वैवाहिक–स्थिति, धर्म, जाति पारिवारिक स्थिति, आय एवं शिक्षा–स्तर।

2– कार्यशील महिलायों के कार्यस्थल से सम्बन्धित प्रमुख विशेषताओं का विवरण।

उपर्युक्त विश्लेषण का उद्देश्य यह ज्ञात करना है कि सामाजिक–आर्थिक पृष्ठभमि से सम्बन्धित कुछ प्रमुख तथ्य कार्यशील महिलाओं की सामाजिक गतिशीलता एवं क्रियाशीलता का समाज पर क्या प्रभाव पड़ता है।

**अध्ययन क्षेत्र एवं विधि तन्त्रः–**

प्रस्तुत शोध क्षेत्र गंगा के विशाल मैदान का एक लघुभाग है जो पहले बस्ती जनपद में समाहित था परन्तु 29 दिसम्बर सन् 1988 को बस्ती जनपद के छः तहसीलों में से तीन को (डुमरियागंज, बाँसी एवं नौगढ़) अलग कर जिले का सृजन किया गया। वर्ष 1990 एवं 1997 में क्रमशः इटवा एवं शोहरतगढ़ के सृजन के बाद जिले में 05 तहसील एवं 14 विकासखण्ड 1015 गाँव तथा 152 न्याय पंचायत है। इसमें नौगढ़ तथा बाँसी नगरपालिका एवं शोहरतगढ़ एवं बढ़नी नगर पंचायते हैं। जनपद का अक्षांशीय विस्तार $27^0 7'–27^0 31'$ उत्तरी अक्षांश तथा $82^0 23'–83^0 18'$ पूर्वी देशान्तर के मध्य है। उत्तर में नेपाल, पूर्व में महाराजगंज, दक्षिण में बस्ती, पश्चिम में बलरामपुर जिले की सीमाायें घेरे हुए है। सृजन के समय जिले का कुल क्षेत्रफल 2990 वर्ग किलोमीटर था। यह उत्तर प्रदेश के क्षेत्रफल का 1.2 प्रतिशत था। पुर्नसीमांकन के फलस्वरूप अब जिले का क्षेत्रफल 2959 वर्ग किलोमीटर हो गया है।

प्रस्तुत शोध पत्र में नगर के कार्यशील महिलायों की सामाजिक–आर्थिक स्थिति के वर्तमान अध्ययन हेतु व्यक्तिगत एवं द्वितीयक आकड़ों के अतिरिक्त साक्षात्कार अनुसूची, वार्तालाप एवं निरीक्षण करके तथ्यों का संकलन किया गया है। अध्ययन हेतु संकलित तथ्यों का विवरण तालिकाओं एवं रेखाचित्रों द्वारा दर्शाया गया है। सह–सम्बन्ध के द्वारा आयु, व्यवसाय एवं शिक्षा में अन्तर्सम्बन्ध प्रकट करने का प्रयास किया गया है।

अध्ययन हेतु चार व्यावसायिक समूहों अध्यापिका, क्लर्क, नर्स, डाक्टर महिलाओं को शामिल किया गया है।

**महिलाओं की आयुः–**

आयु एक ऐसी धारणा है जिसमें व्यक्ति के सम्पूर्ण जीवनकाल (जन्म से मृत्यु तक) को विभिन्न अवस्थाओं में बाँटा जाता है। आयु व्यक्ति के शारीरिक विकास एवं परिपक्वता को प्रदर्शित करती है। महिलाओं की आयु अनेक दृष्टि से महत्वपूर्ण है। बढ़ती आयु के साथ–साथ उनकी जिम्मेदारियाँ बढ़ती जाती हैं। विशेषकर विवाहोपरान्त उन्हें अनेको प्रकार के कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है। सास–ससुर का दबाव, प्रारम्भ में पति की आय कम होने के कारण अनेक महिलाओं को न चाह कर भी कार्योजन में आना पड़ता है।

अध्ययन क्षेत्र में कार्यशील महिलाओं की आयु–संरचना से स्पष्ट है कि 45 प्रतिशत कार्यशील महिलायें 30–40 वर्ष अर्थात युवा है तथा 42 प्रतिशत कार्यशील महिलाये 21–30 वर्ष के आयु वर्ग की है शेष 13 प्रतिशत 40 वर्ष के ऊपर आयु की है।

**महिलाओं की षिक्षाः–**

शिक्षा का समाज के विकास में महत्वपूर्ण स्थान है यह व्यक्ति की सामाजिक–आर्थिक और राजनीतिक स्थित को सुदृढ़ बनाने का आधार प्रस्तुत करता है। कार्यशील महिलाओं के शिक्षा–स्तर का स्पष्टीकरण निम्न तालिका–01 से स्पष्ट है–

**तालिका सं0–01**

| शिक्षा स्तर | प्रतिशत |
|---|---|
| पूर्व स्नातक | 36 |
| स्नातक | 32 |
| स्नात्कोत्तर | 22 |
| प्रोफेशनल उपाधि | 10 |
| योग | 100 |

व्यक्तिगत सर्वेक्षण (2015)

उपर्युक्त तालिका से स्पष्ट है कि शोध क्षेत्र में पूर्व स्नातक, स्नातक, स्नात्कोत्तर एवं प्रोफेशनल उपाधि वाली महिलाएँ क्रमशः 36 प्रतिशत, 32 प्रतिशत, 22 प्रतिशत एवं 10 प्रतिशत है। जो अपनी योग्यता के अनुसार नौकरी में है।

**महिलाओं का धर्म एवं व्यवसायः–**

कार्यों के अनुसार समाज में व्यक्ति स्थान प्राप्त करता है एवं धार्मिक मान्यताओं एवं कर्मकाण्डों के अनुरूप उसकी जीवनशैली, आचार–विचार एवं व्यवहारों का निर्धारण होता है, परन्तु आधुनिक समाज में रूढ़िवादिता कम हुई है। इस अध्ययन में अधिकाधिक महिलायें हिन्दू 93 प्रतिशत, मुस्लिम 05 प्रतिशत व इसाईयों की 02 प्रतिशत संख्या अपेक्षाकृत कम है। तालिका सं0–2 से स्पष्ट है कि हिन्दू धर्म की कार्यशील महिलाओं में अधिकांश अध्यापिकाएं, क्लर्क, डॉक्टर व नर्स है। नगर में इसाईयों की संख्या लगभग नगण्य होने के कारण ये 02 प्रतिशत है।

**तालिका सं0–02**
**महिलाओं का धर्म एवं व्यवसाय**

| धर्म | अध्यापिका | क्लर्क | डाक्टर व अन्य | नर्स | योग |
|---|---|---|---|---|---|
| हिन्दू | 24 | 21 | 20 | 22 | 87 |
| मुस्लिम | 06 | 02 | 01 | 01 | 10 |
| इसाई | 2.5 | 0.5 | – | – | 03 |

जिला सांख्यकीय पत्रिका–2015 सिद्धार्थनगर।

**कार्यशील महिलाओं की जातिः–**

भारतीय सामाज की सबसे महत्वपूर्ण विशेषता जातिगत विभिन्नता है। ब्राह्मण जाति समाज की सबसे उच्च शिखर पर है। जबकि शूद्र जाति सामाजिक व धार्मिक दृष्टि से अति निम्न स्थान पर है। समकालीन भारतीय समाज में, यद्यपि जातियाँ कई वर्गों में बटी थीं लेकिन आधुनिक समाज में जातियों का वर्गीकरण आर्थिक एवं सामाजिक स्तर पर होती जा रही है। यद्यपि जातिगत व्यवस्था भारतीय समाज का एक महत्वपूर्ण तथ्य है। अध्ययन क्षेत्र में जातिगत कार्यशील महिलाओं की स्थिति निम्न तालिका से स्पष्ट है–

**तालिका सं0–03**
**कार्यशील महिलाओं की जाति (सिद्धार्थनगर)**

| जाति | हिन्दू | मुस्लिम | इसाई | योग |
|---|---|---|---|---|
| उच्च जाति | 35 | 01 | 01 | 37 |
| मध्यम जाति | 32 | – | 02 | 34 |
| पिछड़ी व अनुसूचित जाति | 24 | 03 | 02 | 29 |
| योग | 91 | 04 | 05 | 100 |

उपर्युक्त तालिका सं0–03 से स्पष्ट है 91 प्रतिशत कार्यशील महिलाएं हिन्दू, 05 प्रतिशत इसाई व 04 प्रतिशत मुस्लिम है। उच्च जाति के अन्तर्गत ब्राह्मण, क्षत्रिय, उच्च मध्यम जाति के अन्तर्गत कायस्थ, वैश्य तथा पिछड़ी व अनुसूचित जाति के अन्तर्गत अहीर, कुर्मी, कुम्हार, हरिजन, खटिक व धोबी आदि को साम्मिलित किया गया है। इस्लाम धर्म के शेख, सईद को उच्च, पठान को उच्च मध्यम तथा जुलाहा, अंसारी आदि को पिछड़ी व अनुसूचित जाति माना गया है। इसाई धर्म में कोई जातिगत भिन्नता नहीं है।

**महिलाओं की मासिक आयः–**

आधुनिक समाज में व्यक्ति के सामाजिक स्थिति के निर्धारण में आय का महत्वपूर्ण योगदान है। आय के द्वारा ही व्यक्ति वस्तुओं एवं सेवाओं पर अधिकार प्राप्त करता है। आय के निम्नता व उच्चता के द्वारा व्यक्ति के जीवन स्तर का निर्धारण होता है। जो तालिका संख्या–04 से स्पष्ट है–

**तालिका सं0–04**
**महिलाओं की मासिक आय**

| मासिक आय (रू0 में) | आवृति | प्रतिशत |
|---|---|---|
| 10,000–कम | 16 | 16 |
| 10,000–15,000 | 25 | 25 |
| 15,000–20,000 | 32 | 32 |
| 30,000–अधिक | 27 | 27 |
| योग | 100 | 100 |

**महिलाओं का नौकरी में आने का कारणः–**

वस्तुतः नगरीय समाज में मध्यम वर्गीय परिवार की आय इतनी अधिक नहीं होती कि परिवार का भरण–पोषण सुचारू रूप से हो सके, ये परिवार उच्च जीवन–स्तर प्राप्त करने की कामना करते हैं। फलतः परिवार के केवल एक व्यक्ति के धन उपार्जन करने से परिवार का वहन करना असम्भव हो जाता है, इसलिए विवाहित महिलायें परिवार की आर्थिक सहायता करने के लिए नौकरी करती है। कुछ महिलायें आत्म–निर्भर होने की इच्छा, घर के बन्धन से मुक्त होने के लिए भी कार्योजन में आना पसन्द करती हैं। इन तथ्यों के परिप्रेक्ष्य में सर्वेक्षण करके रोजगार में आने के कारणों की पुष्टि करने का प्रयास किया गया है।

उपर्युक्त तथ्यों के विश्लेषण से स्पष्ट है कि 40 प्रतिशत पति की आमदनी कम होने, 21 प्रतिशत महिलायें घर की आर्थिक–स्थिति सुदृढ़ करने तथा 12 प्रतिशत आकस्मिक संकट आ जाने के कारण कार्योजन में आई हैं। परन्तु 07 प्रतिशत ऐसी महिलायें है जो स्वतन्त्र रहने के लिए कार्योजन में आना पसन्द करती हैं। अतः स्पष्ट है कि अधिकांश कार्योजित महिलायें अपनी सामाजिक–आर्थिक स्थिति सुदृढ़ करने के लिए प्रतिबद्ध हैं।

व्यवसाय के आधार पर तथ्यों में यह स्पष्ट होता है कि अधिकांश महिलायें (अध्यापिका, डॉक्टर, नर्स) अपने पैरों पर खड़े होने के लिए, क्लर्क व नर्स घर की आर्थिक स्थिति सुदृढ़ करने के लिए, अध्यापिका व क्लर्क पति की आमदनी कम होने के कारण तथा डॉक्टर व नर्स स्वतन्त्र रहने की इच्छा से कार्योजन अधिक पसन्द करती हैं। अधिकांश कार्योजन महिलायें 31–40 वर्ष के आयु वर्ग की है। जिनमें सर्वाधिक (22 प्रतिशत) महिलायें स्वावलम्बी बनने हेतु रोजगार में हैं।

जबकि 20–30 आयु वर्ग में यह प्रतिशत 13 है। इनके शिक्षा स्तर से स्पष्ट होता है कि 35 प्रतिशत पूर्व स्नातक, 30 प्रतिशत स्नातक, 20 प्रतिशत स्नात्कोत्तर एवं 15 प्रतिशत कार्योजित महिलायें प्रोफेशनल उपाधि प्राप्त की है।

**निष्कर्षः–**

उपरोक्त अध्ययन से स्पष्ट है कि 40 प्रतिशत कार्योजित महिलायें 20–30 वर्ष आयु की, 43 प्रतिशत 31–40 वर्ष तथा 17 प्रतिशत 41 वर्ष से अधिक आयु–वर्ग कार्यशील महिलायें अपने पति के व्यवसाय व आमदनी से संतुष्ट हैं परन्तु 20 प्रतिशत महिलायें असंतुष्ट पाई गयी है। अधिकांशतः महिलायें घर की आय में वृद्धि एवं आर्थिक सुदृढ़ता के लिए रोजगार में आई है। केवल 07 प्रतिशत स्वतन्त्र रहने की इच्छा से कार्योजन ग्रहण की है। इस प्रकार सामाजिक आर्थिक स्तर की दृष्टि से वर्तमान अध्ययन की कार्योजित महिलायें मध्यम वर्गीय श्रेणी में आती हैं और उनके पतियों का भी सामाजिक–आर्थिक स्तर लगभग समान है।

अतः स्पष्ट है कि कार्यशील महिलाओं की भूमिका की परिस्थिति में परिवर्तन आया है। यह ऐसा परिवर्तन है जो समाज की अन्य सीमाओं को भी स्पर्श करता है। आज महिलायें रोजगार के लगभग सभी क्षेत्रों में अपना स्थान बना रही हैं। जो भारतीय समाज के लिए वरदान सिद्ध हो रहा है।

## References:

[1]. Shah, A.M. (1970) The Household Dimension of the family in India, Orient Longmans, Delhi.
[2]. Gore, M.S. (1968) Urbanization and family Change in India, Polular, Bombay.
[3]. Kapoor P. (1970) Marriage and the werhing women in India, Vihas Publication, Delhi.
[4]. Passons, T. (1942) Age and Sex in Social Structure of the united states, American sociological Review.
[5]. Sorahin, P.A. & Srinivas, M.N. (1972) Social culture Mobility. The frae press, Geineoe.